# Baglamukhi Mantra Evam Puja Vidhi in Hindi

# माँ बगलामुखी मंत्र एवं पूजा विधि

**Sumit Girdharwal**
(सुमित गिरधरवाल)
Mob - 9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

## ।। भगवती पीताम्बरा के एकाक्षरी मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र को महामंत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवती बगलामुखी की उपासना करने वाले

साधक के सभी कार्य बिना व्यक्त किये पूर्ण हो जाते हैं और जीवन की हर बाधा को वो हंसते हंसते पार कर जाते हैं मैनें स्वयं अपने जीवन में अनेको चमत्कार देखें हैं, जिनको सुनकर कोई भी यकीन नही करेगा लेकिन भगवती पीताम्बरा अपने भक्तों के ऊपर ऐसे ही कृपा करती हैं एकाक्षरी मंत्र माँ पीताम्बरा का बीज मंत्र है, इसके जप के बिना माँ पीताम्बरा की साधना पूर्ण नही होती । माँ पीताम्बरा की साधना इसी बीज मंत्र से प्रारम्भ होती है, एवं साधको को बीज मंत्र का नियमित रूप से कम से कम २१ माला का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि बीज मंत्र में ही देवता के प्राण होते हैं जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष की कल्पना नही की जा सकती उसी तरह बीज मंत्र के जप के बिना साधना में सफलता के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। भगवती की सेवा केवल मंत्र जप से ही नही होती है बल्कि उनके नाम का गुणगान करने से भी होती है । जिस प्रकार नारद ऋषि हर पल भगवान विष्णु का नाम जपते थे, उसी प्रकार सुधी साधको को माँ पीताम्बरा का नाम जप हर पल करना चाहिए एवं अन्य लोगो को भी उनके नाम की महिमा के बारे में बताना चाहिए । मैंने अपने जीवन का केवल एक ही उद्‌देश्य बनाया है कि माँ पीताम्बरा के नाम को हर व्यक्ति तक पहुंचाना है आप सब भी यदि माँ की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो आज से ही भगवती के एकाक्षरी मंत्र को अपने जीवन में उतार लीजिए एवं माँ के नाम एवं उनकी महिमा का अधिक से अधिक प्रचार करना शुरू कर दीजिए। साधको के हितार्थ भगवती के बीज मंत्र की जानकारी यहां दे रहा हूँ, भगवती पीताम्बरा आप सब पर कृपा करें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

## ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।

गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्र्यन्त्राणा यंत्रितः।

श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

मंत्र - ह्ल्रीं (Hlreem)

विनियोगः-

ओम् अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

**ऋष्यादिन्यासः-**

- ओम् ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

## षडंगन्यासः

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

## करन्यासः

- ओम ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

## बीज मंत्र का अनुष्ठान

एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला ) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । उसके पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा

125 माला ) से हवन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि हवन से देवता को शक्ति मिलती है और मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है कि हवन से माँ की कृपा बहुत जल्दी मिलती है। इसलिए हवन से बढकर कुछ नही है। यदि हो सके तो हवन नियमित रूप से करना चाहिए । जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरू से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए एवं उस हवन में सम्मिलित होना चाहिए । अपने गुरू से हवन विधि सीखने के लिए निवेदन करें । पूर्णाभिषेक दीक्षा तक हवन करना अवश्य सीख लेना चाहिए।

इसके पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला ) से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण करने का मंत्र है "हल्रीं तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर जल अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "हल्रीं तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए ।
तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला ) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "हल्रीं मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "हल्रीं मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते। यदि आपके गुरू नही हैं तो "ओम् पीताम्बरायै नमः" मंत्र का हल्दी की माला पर नियमित रूप से जप करें एवं माँ से गुरू प्राप्ति के लिए आग्रह करें ।

मेरे पास बहुत से लागो के ईमेल एवं फोन आते है जो चाहते है कि माँ पीताम्बरा की पूजा का क्रम बतायें । साधको के हितार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ -

१. आसन पूजा, आचमन एवं शुद्धि-करण

२. गुरू पूजन

३. गणेंश पूजन (हरिद्रा गणपति पूजन)

४. भैरव पूजन - शक्ति की उपासना में भैरव पूजन का विशेष महत्व होता है माँ बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय भैरव हैं इसलिए भगवती की उपासना से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं जप के अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

५. ध्यान : इसके पश्चात भगवती पीताम्बरा का ध्यान करें कि माँ आपके हृदय में सहस्रदल कमल के फूल पर विराजित हैं। माँ के चरणों का ध्यान करते हुए मन ही मन उनके चरणों में पीले पुष्प अर्पित करें एवं उनसे सदैव अपने हृदय में निवास करने की प्रार्थना करें ।

६. माँ का पूजनः ध्यान करने के पश्चात सामर्थ्यानुसार गंध (इत्र), धूप, दीप, पुष्प, ताम्बूल (पान) चन्दन आदि माँ को समर्पित करें ।

७. कवचः इसके पश्चात माँ के कवच का पाठ करें। कवच का पाठ आपको साधना में आने वाली सभी विपत्तियों से दूर रखता है। कवच के पाठ से माँ का सान्निध्य प्राप्त होता है

८. मंत्र जप - कवच के पाठ के बाद विनियोग, न्यासादि करें एवं उसके पश्चात अपने मंत्र का जप सुनिश्चित संख्या में करें ।

९. अन्य स्तोत्र एवं पाठ - मंत्र जप के पश्चात यदि समय हो तो भगवती के हृदय स्तोत्र, अष्टोत्तरशतनाम, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए ।

१०. मृत्युंजय भैरव मंत्र - अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

११. क्षमा याचना एवं जप समर्पण - अन्त में माँ से क्षमा याचना करें । अपने सीधे हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने द्वारा किये गये सभी मंत्र जप को माँ के बायें हाथ में समर्पित करें एवं जल को माँ के बायें हाथ में अथवा बगलामुखी यंत्र पर चढा दें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

१२. अन्त में माँ को प्रणाम करते हुए अपने आसन के नीचे जल डालकर अपने माथे से लगायें एवं बायें पैर को पहले पृथ्वी पर रखते हुए बाद में दायें पैर को पृथ्वी पर रखें ।

१३. साधना करने के बाद कम से कम आधा घण्टे तक मौन अवश्य रखना चाहिए । इससे साधक का तप क्षीण नही होता ।

१४. अपने आसन एवं माला को किसी भी व्यक्ति को छूने नही देना चाहिए चूँकि इन दोनो में साधक की आध्यात्मिक उर्जा छुपी होती है ।

१५. एक साधक को कभी भी किसी की निन्दा नही करनी चाहिए और ना ही कभी अंहकार करना चाहिए । ये दोनो साधक को दैवीय कृपा से दूर करते हैं और साधक की सारी उर्जा का नाश कर देतें हैं।

१६. साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी माँ पीताम्बरा अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं, सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर माँ के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो माँ की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपको कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया

उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी-देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को  प्राप्त करेगी।

## Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya By Shri Yogeshwaranand Ji

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com or sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

# Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. To do the same I request all of you to help me achieve this goal.

## Requirements to accomplish this goal

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project to complete.

I am waiting for your feedback and support.
Sumit Girdharwal
+91-9540674788,
+91-9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
sumitgwal@gmail.com

Dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

# Books written by Shri Yogeshwaranand Ji.

**1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi**
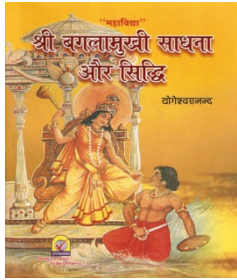
2. **Mantra Sadhana**
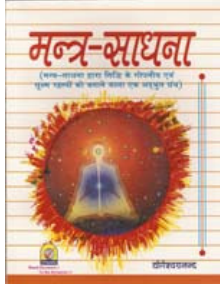
3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org